Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 2

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)** **[10]**

बीसवीं शताब्दी में भारत ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी-उपनिवेशवादी व्यवस्था को अपने ऊपर से उतार फेंका। महात्मा गांधी की प्रेरणा से भारतीय जनता ने एक नए ढंग का संघर्ष कर अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। गांधीजी ने राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया। उनके लिए राजनैतिक और प्रशासनिक भेदभाव के खिलाफ लड़ना जितना महत्त्वपूर्ण था उतना ही महत्वपूर्ण था सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर के भेदभाव के विरुद्ध खड़ा होना। अपनी आत्मकथा' में गांधीजी लिखते हैं- "ऐसे व्यापक सत्यनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए प्राणीमात्र के प्रति आत्मवत (अपने समान) प्रेम की भारी जरूरत है। इस सत्य को पाने की इच्छा करने वाला मनुष्य जीवन के एक भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि मेरी सत्यपूजा मुझे राजनैतिक क्षेत्र में घसीट ले गई। जो कहते हैं कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है, मैं निस्संकोच होकर कहता हूँ कि ये धर्म को नहीं जानते और मेरा विश्वास है कि यह बात कह कर मैं किसी तरह विनय की सीमा को लाँघ नहीं रहा हूँ। आज राजनीति को धर्म से अलग मानने वालों को गांधीजी की यह बात जरूर सुननी चाहिए। अपने इसी विश्वास के कारण गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को प्रमुखता से आगे बढ़ाया क्योंकि वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा। उनका मानना था कि करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ही स्वाधीन भारत की पहचान होनी चाहिए।

(i) गांधीजी ने किस प्रकार का संघर्ष कर भारत को स्वाधीनता दिलाई? (1)

क) सशस्त्र संघर्ष

ख) हिंसक संघर्ष

ग) अहिंसक संघर्ष

घ) सामरिक संघर्ष

(ii) गांधीजी के लिए किसके विरुद्ध खड़ा होना महत्त्वपूर्ण था? (1)

क) विदेशी शासन के

ख) सामाजिक और धार्मिक भेदभाव के

ग) आर्थिक असमानता के

घ) सांस्कृतिक विरासत के

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): गांधीजी ने स्वाधीनता संग्राम में सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष को भी शामिल किया।

कथन (II): गांधीजी का मानना था कि केवल राजनीतिक मुक्ति ही भारत की समग्र मुक्ति है।

कथन (III): गांधीजी का विश्वास था कि राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता।

कथन (IV): गांधीजी ने स्वाधीन भारत की पहचान को आर्थिक उन्नति तक सीमित माना।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।

ख) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

घ) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

(iv) गांधीजी ने राजनीति के साथ किसका संघर्ष भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया? (1)

(v) गांधीजी के अनुसार स्वाधीन भारत की पहचान क्या होनी चाहिए? (2)

(vi) गांधीजी के अनुसार राजनीति और धर्म के बीच क्या संबंध है? (2)

(vii) गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को क्यों प्रमुखता से आगे बढ़ाया? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (8)** **[8]**

जाग रहे हम वीर जवान,
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर, अचल।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं,
हम हैं शांति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीरप्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं,
गंगा, यमुना, हिंद महासागर के हम ही रखवाले हैं।
तन, मन, धन, तुम पर कुरबान
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।
हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण,
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन।
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हलाहल
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल।
थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर,
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर।
हम उन वीरों की संतान, जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।

i. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर, भारतीय सैनिकों के बारे में क्या कहा गया है? (1)**

I. वे केवल शांति के प्रतीक हैं।

II. वे वीरता, धैर्य और गंभीरता के प्रतीक हैं।

III. वे केवल युद्ध में भाग लेते हैं।

IV. वे देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार हैं।

विकल्प:

क) केवल कथन II और IV सही हैं।

ख) कथन I और III सही हैं।

ग) केवल कथन IV सही है।

घ) कथन II और IV सही हैं।

ii. **'हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के' पंक्ति में 'हिमाद्रि' का क्या तात्पर्य है? (1)**

क) पर्वतों की रक्षा करने वाले

ख) समुद्र के रक्षक

ग) नदी के रक्षक

घ) मैदानों के रक्षक

iii. **नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें: (1)**

कॉलम 1	कॉलम 2
I. भारतीय सैनिकों की विशेषता	1 - शांति, वीरता, धैर्य।
II. वे किसे अपनी प्रेरणा मानते हैं?	2 - स्वर्ग और पृथ्वी के संयोग।
III. भारतीय सैनिकों की प्रेरणा स्रोत	3 - वीरों की संतान होना।

क) I - (1), II - (3), III - (2)

ख) I - (3), II - (1), III - (2)

ग) I - (2), II - (3), III - (1)

घ) I - (1), II - (2), III - (3)

iv. **'थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर' का क्या अर्थ है? (1)**

v. **कविता में 'हम नवीन उजियाले हैं' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है? (2)**

vi. **'हम उन वीरों की संतान' पंक्ति में कवि किस पर गर्व कर रहे हैं? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

   i. **भूकंप का वह दिन** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

   ii. **लोकतंत्र में चुनावों का महत्त्व** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

   iii. **शिक्षक दिवस पर कैसे हुआ शिक्षकों का सम्मान** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)** **[8]**

   i. **भक्तिन** पाठ के कथन **मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है** - का आशय स्पष्ट कीजिए। **[2]**

   ii. बाज़ार का जादू किन लोगों पर अधिक असर करता है? इसके चढ़ने-उतरने पर क्या स्थिति होती है? **[2]**

   iii. **पहलवान की ढोलक** पाठ का एक संदेश यह भी है कि लोक-कलाओं को संरक्षण दिया जाना चाहिए। अपने विचार लिखिए। **[2]**

   iv. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? कविता के बहाने के आधार पर बताइए। **[2]**

   v. अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्दचित्र खींचिए। **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

   i. विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें। **[4]**

   ii. समाचार लेखन और फ़ीचर लेखन में क्या अंतर है? **[4]**

   iii. फ़ीचर कैसे लिखे जाते हैं? अच्छे फ़ीचर की विशेषताएँ लिखिए। **[4]**

   iv. यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था? **सिल्वर वैडिंग** के आधार पर बताइए। **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हो जाए न पथ में रात कहीं
जल्दी-जल्दी चलता है।
मंज़िल भी तो है दूर नहीं-

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
यह सोच थका दिन का पंथी भी

i. प्रस्तुत काव्यांश के कवि और कविता का क्या नाम है?

क) कुँवर नारायण-कविता के बहाने | ख) रघुवीर सहाय-सहर्ष स्वीकारा है
ग) तुलसीदास-कवितावली | घ) हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

ii. कवि के मन में किस चीज की आशंका है?

क) घर न पहुँच पाने की | ख) घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की
ग) घर पहुँच पाने की | घ) यात्रा बिना रुकावट पूरी हो जाने की

iii. कवि किस आशा से प्रेरित हो उठता है?

क) मंजिल तक पहुँचने में बहुत समय शेष है | ख) मंजिल तक पहुँचकर वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएगा
ग) मंजिल पास ही आने वाली है | घ) कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा है

iv. थका हुआ पथिक किसे पाने के कारण जल्दी-जल्दी चलता है?

क) अपने स्वार्थ को | ख) अपने लक्ष्य को
ग) अपने साथी को | घ) अपने भोजन को

v. लक्ष्य को पाने की व्यग्रता के कारण कवि को कैसा प्रतीत होता है?

क) दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है | ख) दिन ढल ही नहीं रहा है
ग) सभी विकल्प सही हैं | घ) दिन के बाद रात न जाने कब आएगी

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. व्याख्या करें- **[3]**
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

ii. राम कौशल्या के पुत्र थे लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य कर ऐसा क्यों कहा- मिलइ न जगत सहोदर भ्राता? इस पर विचार करें। **[3]**

iii. **कविता के बहाने** कविता के कवि को क्या आशंका है और क्यों? **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए **सबसे हल्की और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी** जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है? **[2]**

ii. **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता के प्रतिपाद्य के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए। **[2]**

iii. **विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते** पंक्ति में **विप्लव-रव** से क्या तात्पर्य है? **छोटे ही है, शोभा पाते** ऐसा क्यों कहा गया है? **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी

जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

i. श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा किससे युक्त है?

क) सुखद परिणामों से
ख) गंभीर दोषों से
ग) सरल दोषों से
घ) दुःखद दोषों से

ii. जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस पर निर्भर नहीं रहता?

क) मनुष्य की स्वेच्छा पर
ख) मनुष्य की समझदारी पर
ग) मनुष्य की गलती पर
घ) मनुष्य की शिक्षा पर

iii. श्रम विभाजन पर मनुष्य की किस भावना का कोई महत्त्व नहीं रहता?

क) सामाजिक भावना
ख) राजनीतिक भावना
ग) भेदभावपूर्ण भावना
घ) व्यक्तिगत भावना

iv. किसी भी काम में कुशलता कब प्राप्त नहीं होती है?

क) जब तक समाज से सहायता प्राप्त नहीं होती
ख) जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता
ग) जब तक व्यक्ति चिताओं से नहीं घिरता है
घ) जब तक परिवार का सहयोग नहीं मिलता

v. जाति-प्रथा मनुष्य को निष्क्रिय कैसे बना देती है?

क) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि को दबाकर
ख) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर
ग) मनुष्य को आलसी बनाकर
घ) मनुष्य की आत्मशक्ति को दबाकर

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. लुट्टन सिंह को राज-पहलवान की उपाधि कैसे मिली? **[3]**

ii. भक्तिन की सहजबुद्धि किस प्रकार विस्मित कर देने वाली है? **[3]**

iii. **शिरीष के फूल** पाठ में चर्चित अशोक वृक्ष की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **बाज़ार दर्शन** पाठ से उद्धृत पंक्ति जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। - का आशय स्पष्ट कीजिए। **[2]**

ii. **पानी दे, गुड़धानी दे** मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है? **[2]**

iii. **भीमराव रामजी आंबेडकर** पाठ के आधार पर जातिवाद के पोषकों के समर्थन के आधार में क्या आपत्तिजनक है? **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. क्या यशोधर बाबू को अतीत जीवी कहा जा सकता है? पक्ष या विपक्ष में उदाहरण सहित अपना उत्तर दीजिए। **[5]**

ii. वसंत पाटील कौन है? लेखक आनंद यादव ने उससे दोस्ती क्यों व कैसे की? **[5]**

iii. सिंधु-सभ्यता में नगर नियोजन से भी कहीं ज़्यादा सौंदर्य-बोध के दर्शन होते हैं। **अतीत में दबे पाँव** पाठ में दिए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) अहिंसक संघर्ष
(ii) ख) सामाजिक और धार्मिक भेदभाव के
(iii) क) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।
(iv) गांधीजी ने राजनीति के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया।
(v) गांधीजी के अनुसार करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ही स्वाधीन भारत की पहचान होनी चाहिए।
(vi) गांधीजी के अनुसार राजनीति को धर्म से अलग मानना गलत है, वे कहते हैं कि राजनीति में धर्म का होना आवश्यक है।
(vii) गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को इसलिए प्रमुखता से आगे बढ़ाया क्योंकि वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा।

2. i. ख) कथन I और III सही हैं।
ii. क) पर्वतों की रक्षा करने वाले
iii. घ) I - (1), II - (2), III - (3)
iv. 'थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर' का अर्थ है कि जिन वीरों की गर्जना और साहस से तीनों लोक (पृथ्वी, स्वर्ग, और पाताल) कांप उठते थे। यह वीरों की अद्भुत शक्ति और पराक्रम को दर्शाता है।
v. 'हम नवीन उजियाले हैं' पंक्ति से कवि का तात्पर्य है कि वे नए युग की नई पीढ़ी हैं, जो अपने ज्ञान, साहस और दृढ़ संकल्प से देश को प्रगति और उजाले की ओर ले जाएंगी।
vi. 'हम उन वीरों की संतान' पंक्ति में कवि उन वीर पूर्वजों पर गर्व कर रहे हैं, जिन्होंने अपने साहस, बलिदान और शौर्य से देश की रक्षा की और उसे महान बनाया।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **भूकंप का वह दिन**

जब सृष्टि की गोद में जगती नींद थी, तब आया एक भयानक भूकंप का दिन। वह दिन मेरे जीवन में एक ऐसी घटना थी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। आचानक, धरातल हिलने लगा और आसमान गूंज उठा। मानवता के भय से अपने घरों से निकले लोग भागने लगे। मैंने अपने परिवार को अपने आस-पास इकट्ठा होते देखा और एक सुरक्षित स्थान की तलाश में हम सब तेजी से दौड़ते हुए एक पार्क में जा पहुँचे। भूकंप ने पूरी धरती को हिला दिया था। आसमानी वास्तविकताओं की भीड़ ने मन को काँप दिया। हम अपने सुरक्षित स्थान पर बैठे रहे, ध्यान देते रहे और भगवान की कृपा की प्रार्थना करते रहे। वह समय काफी लंबा लगा, लेकिन आखिरकार भूकंप की गहराई घटी और हमारे चारों ओर की स्थिति स्थिर हुई। भूकंप का वह दिन मेरे लिए जीवन का एक महत्वपूर्ण सबक था। यह दिखा कि हमारी स्थिति कितनी अनिश्चित हो सकती है और हमारी कमजोरियाँ कितनी छोटी हो सकती हैं। उस दिन ने मुझे जीने का तात्पर्य और विश्वास दिया कि हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए और अपने परिवार और साथियों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

(ii) लोकतंत्र में चुनावों का महत्त्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधियों का चयन करती है और सरकार को जवाबदेह बनाती है। यह प्रक्रिया न केवल राजनीतिक स्थिरता को सुनिश्चित करती है, बल्कि नागरिकों को अपनी आवाज उठाने का अवसर भी प्रदान करती है।

चुनावों के माध्यम से जनता अपने नेताओं का चयन करती है, जो उनके हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रक्रिया लोकतंत्र की नींव है, क्योंकि यह सुनिश्चित करती है कि सरकार जनता की इच्छाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करे। चुनावों के /बिना, लोकतंत्र का अस्तित्व संभव नहीं है, क्योंकि यह प्रक्रिया ही जनता को सत्ता में भागीदारी का अधिकार देती है।

इसके अलावा, चुनाव सरकार को जवाबदेह बनाते हैं। जब नेता जानते हैं कि उन्हें जनता के सामने जवाब देना है, तो वे अधिक जिम्मेदारी से काम करते हैं। चुनावों के माध्यम से जनता अपने नेताओं के कार्यों का मूल्यांकन करती है और उन्हें पुनः चुनने या बदलने का निर्णय लेती है।

चुनावों का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा देते हैं। चुनावों के माध्यम से हर नागरिक को अपनी राय व्यक्त करने का समान अधिकार मिलता है, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या वर्ग का हो। यह प्रक्रिया समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा देती है।

अंत में, चुनाव लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं और जनता को अपने भविष्य का निर्धारण करने का अधिकार देते हैं। यह प्रक्रिया न केवल राजनीतिक स्थिरता को सुनिश्चित करती है, बल्कि समाज में समानता, न्याय और एकता को भी बढ़ावा देती है। इसलिए, लोकतंत्र में चुनावों का महत्त्व अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसे बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

(iii) शिक्षक दिवस एक ऐसा दिन है जब हम शिक्षकों का आभार व्यक्त करते हैं और उनके समर्पण और मेहनत को मान्यता देते हैं। यह एक महत्वपूर्ण अवसर है जब हम शिक्षकों के प्रति हमारी आभारी भावना को व्यक्त कर सकते हैं। इस दिन पर, छात्रों और छात्राओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जैसे विशेष वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ, गान और नाटक प्रदर्शन। छात्र अपने प्रिय शिक्षकों के प्रति अपनी आदर्शवादी भावना को व्यक्त करते हैं और उन्हें पुरस्कार भी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, सरकार और शैक्षणिक संगठन भी विभिन्न कार्यक्रम

आयोजित करके शिक्षकों को सम्मानित करते हैं। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि शिक्षक हमारे समाज के नेतृत्व का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और हमें उनके समर्पण और मेहनत का सम्मान करना चाहिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)

(i) 'भक्तिन' पाठ में आए कथन 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' का अर्थ है कि भक्तिन के जीवन में धन कहीं नहीं था, जबकि उसका नाम लक्ष्मी था. लक्ष्मी धन की देवी का नाम है, इसलिए भक्तिन के जीवन में धन न होने की वजह से उसका नाम विरोधाभास प्रतीत होता था. समाज में उसका उपहास न हो, इसलिए वह अपना असली नाम लोगों से छुपाती थी. भक्तिन ने लेखिका से यह नाम प्रयोग न करने की प्रार्थना की|
भक्तिन के जीवन के बारे में कुछ और बातें:

- भक्तिन को जीवन में कई संघर्षों का सामना करना पड़ा|
- उसे गरीबी, सामाजिक रूढ़ियों, और पति के व्यवहार से जूझना पड़ा|
- भक्तिन तीन पुत्रियों की मां थी और उसका कोई पुत्र नहीं था|
- भक्तिन के जेठ ने संपत्ति के लालच में उसकी विधवा बेटी को फसाया था|
- भक्तिन के जेठ के साले ने उसकी विधवा बेटी के साथ दुष्कर्म करने की कोशिश की थी|

(ii) बाज़ार का जादू उन लोगों पर अधिक असर करता है जिनकी जेब भरी हो और मन खाली हो या जिनकी जेब खाली हो और मन भरा हुआ हो। इस जादू के चढ़ने पर व्यक्ति को सभी सामान जरुरी और आराम को बढ़ाने वाला लगता है और वह उसे ख़रीद लेता है। इस जादू के उतरने पर उसे पता चलता है कि फैंसी वस्तुओं की अधिकता से उसे आराम नहीं मिलता बल्कि ये उसके आराम में खलल डालती हैं।

(iii) औद्योगीकरण के कारण बढ़ते शहरीकरण में प्राचीन लोककलाओं की प्रासंगिकता समाप्त होती जा रही है इसलिए ये धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही हैं। जो प्रासंगिक नहीं रह जाता, उसे समाप्त होना ही पड़ता है। आधुनिक समय में लोगों के मूल्य एवं जीवन-शैली अत्यधिक परिवर्तित हो गए हैं। अब कुश्ती जैसी कलाओं का अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। आज के नए दौर में क्रिकेट, फुटबॉल, तैराकी, हॉकी, जिमनास्टिक जैसे अन्य खेल अधिक लोकप्रिय हो गए हैं। 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लुट्टन पहलवान या कुश्ती जब तक राज्याश्रित था, तब तक फला-फूला, लेकिन राज दरबार से निकल जाने के बाद उसकी स्थिति मरणासन्न हो गई। कुश्ती जैसी कलाओं के पुनर्जीवन के लिए सरकार के निवेश से ही शहरी एवं ग्रामीण नवयुवकों को विद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अच्छे प्रशिक्षक के अंतर्गत उचित प्रशिक्षण एवं सम्मान आदि मिलना आवश्यक है। अतः ढोल बजाने के इस उत्साहपूर्ण तरीके के आधार पर यह कहना उचित ही है कि इस पाठ में लोक-कलाओं को संरक्षण दिए जाने का संदेश दिया गया है।

(iv) कविता और बच्चे दोनों अपने स्वभाव के अनुसार खेलते हैं। खेल-खेल में वे अपनी सीमा, अपने-परायों का भेद भूल जाते हैं। कवि ने बच्चे और कविता को समानांतर रखा है। बच्चों में रचनात्मक ऊर्जा होती है। उनके खेलने की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। उनके सपने असीम होते हैं। इसी तरह कविता भी रचनात्मक तत्वों से युक्त होती है। उसका क्षेत्र भी विस्तृत होता है। उनकी कल्पना शक्ति अद्भुत होती है।

(v) प्रातः कालीन सूर्य उदित हो रहा है 'जो ऐसा लगता है' मानो वह अपने सुनहरे वस्त्रों की रोशनी से आकाश और धरती दोनों को भर देता है। सभी अपने दिन की शुरुआत उस सुनहरी आभा से करते है। धीरे-धीरे दिन आगे बढ़ता है सूर्यास्त के समय जैसे हम अपनी पोशाक बदल कर सोने जाते है वैसे ही सूर्य हल्की लाल पोशाक पहनकर सोने के लिए तैयार हो जाता है। उसे देखकर सभी अपने दैनिक कार्य समाप्त कर सोने की तैयारी करने लगते है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन कार्य ही विशेष लेखन कहलाता है। समाचारपत्रों, और पत्रिकाओं के अलावा टीवी और रेडियो में इस प्रकार के लेखन का विशेष महत्त्व होता है जो पाठकों और श्रोताओं में न केवल ज्ञान का संचार करता है बल्कि उनमें सामाजिक जागरूकता भी उत्पन्न करता है।

(ii) समाचार लेखन और फीचर लेखन में निम्नलिखित अंतर हैं-

- समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है जबकि फीचर में कल्पनाशीलता, अनुभूति और भावनाओं पर बल दिया जाता है।
- फीचर-लेखन की शैली-कथात्मक, समाचार लेखन की शैली-उलटा पिरामिड शैली होती है।
- समाचार में छह ककारों का प्रयोग अनिवार्य होता है जबकि फीचर में ककारों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं है।
- समाचार लेखन की भाषा सरल, सहज एवं व्यवहारिक होती है जबकि फीचर लेखन की भाषा रूपात्मक, आकर्षक और दिल को छूने वाली होती है।

(iii) **फीचर-** सुव्यवस्थित, सृजनात्मक, आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना है। फीचर लेखन की कोई एक निश्चित शैली नहीं होती तथापि फीचर लेखन में कथात्मक शैली प्रमुख होती है। फीचर वैयक्तिकता पर आधारित होता है। इसका रूप सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाला होना चाहिए।

(iv) यशोधर बाबू डेमोक्रेट बाबू थे। वे हरगिज यह दुराग्रह नहीं करना चाहते थे कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर मानें। अतः बच्चों को अपनी इच्छा से काम करने की पूरी आज़ादी थी। यशोधर बाबू तो यह भी मानते थे कि आज बच्चों को उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान है, मगर अनुभव का अपना अलग महत्त्व होता है। अतः वे सिर्फ इतना भर चाहते थे कि बच्चे जो कुछ भी करें, उनसे पूछ जरूर लें। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि वे स्वयं चाहे जितने पुराणपंथी थे, बच्चों को स्वतंत्र जीवन जीने देते थे।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हो जाए न पथ में रात कहीं
जल्दी-जल्दी चलता है।
मंज़िल भी तो है दूर नहीं-

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
यह सोच थका दिन का पंथी भी

(i) **(घ)** हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है
व्याख्या:
हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

(ii) **(ख)** घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की
व्याख्या:
घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की

(iii) **(ग)** मंजिल पास ही आने वाली है
व्याख्या:
मंजिल पास ही आने वाली है

(iv) **(ख)** अपने लक्ष्य को
व्याख्या:
अपने लक्ष्य को

(v) **(क)** दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है
व्याख्या:
दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) 'छोटा मेरा खेत' में खेती के रूपक द्वारा काव्य-रचना की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया हे। जिस प्रकार धरती में बीज बोया जाता है और वह बीज विभिन्न रसायनों - हवा, पानी, आदि को पीकर तथा विभिन्न चरणों से गुजरकर बड़ा होता है उसी प्रकार जब कवि को किसी भाव का बीज मिलता है तब कवि उसे आत्मसात करता है। उसके बाद भावनाओं के बीज में से शब्दरुपी अंकुर फूटते है। उसमें विशेष भावों के पत्ते और फूल पनपते हैं जिससे वह कविता विशेष रूप से झुक जाती है अर्थात समाज के लिए समर्पित हो जाती तत्पश्चात कविता का जन्म होता है।

(ii) राम और लक्ष्मण सगे भाई नहीं थे। वे सौतले भाई थे लेकिन उनके मध्य जो प्रेम था, वे सगे भाइयों से भी बढ़कर था। लक्ष्मण सदैव राम के साथ छाया के समान बने रहे। राम को जब वनवास मिला, तो वह चुपचाप राम के साथ हो लिए। उन्होंने अपनी पत्नी तथा माता-पिता तक का त्याग कर दिया। बस राम की सेवा को ही अपना कर्तव्य समझा। राम उनके लिए भाई नहीं बल्कि स्वामी के समान थे। अपने सौतेले भाई के प्रेम के कारण ही राम ने ऐसे शब्द कहे। इस प्रकार का प्रेम तो सगा भाई भी नहीं कर सकता, जैसा सौतेले भाई ने किया था। अतः राम उन्हें सगा ही मानते थे। राम की प्रत्येक विपत्तियों उन्होंने सहायता की। अपने भाई के स्नेह, सेवा, त्याग,तपस्या को देखकर ही उन्होंने ऐसा कहा होगा।

(iii) कवि को कविता के अस्तित्व या भविष्य के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएं समाप्त होती जा रही हैं। वह मशीन बनता जा रहा है, कविता का भाव समझने का वक्त ही उसके पास नहीं है, मनुष्य ने स्वयं को सीमित कर लिया है जबकि कविता के लिए मुखर होने की आवश्यकता होती है अतः कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) पतंग के लिए सबसे हल्की और सबसे रंगीन पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग कर कवि उसका साकार रूप पाठकों के सामने रखना चाहते हैं, उनके मन में जिज्ञासा जगाना चाहते हैं तथा पतंग जैसी सामान्य वस्तु को विशिष्ट बनाकर पाठकों का ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं क्योंकि विशेष वस्तु प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न करने और अपनी चीज को बेहतर कहने का यही स्वाभाविक तरीका होता है।

(ii) प्रस्तुत कविता में कवि रघुवीर सहाय ने मीडिया व समाज की संवेदनहीनता पर तीखा कटाक्ष किया है। अपने कार्यक्रम को आकर्षक और बिकाऊ बनाने के लिए मीडियाकर्मी विकलांगों की दयनीयता को अत्यंत क्रूरता से उभारते हैं। अपाहिजों को कैमरे के सामने लाकर उनसे ऐसे क्रूर प्रश्न पूछे जाते है, उनके दर्द को इस तरह झकझोरा जाता है कि उनकी बेबस आँखों से दर्द बहने लगता है। यही दर्द मीडियाकर्मियों के कार्यक्रम की सफलता का द्योतक है। यह कविता समाज की दारुण बिडंबनाओ को पकड़ने तथा उसके व्यवसायीकरण करने को दर्शाती है। अपनी व्यंजना मे यह कविता हर ऐसे व्यक्ति एवं संगठन की ओर इशारा करती है, जो दुःख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है या उसका व्यावसायिक लाभ लेना चाहता है।

(iii) 'विप्लव-रव' से कवि का तात्पर्य क्रांति से है। कवि के अनुसार जब क्रांति होती है, तो गरीब लोगों में या आम जनता में जोश भर जाता है। यह वही वर्ग है, जो शोषण का शिकार होते हैं। अतः क्रांति का आह्वान हमेशा शोषित वर्ग द्वारा होता है। जब समाज में क्रांति होती है, तो इन्हीं से आरंभ होती है। यही क्रांति के जनक होते हैं। क्रांति का आगाज़ होते ही नए और सुनहरे भविष्य के सपने संजोने लगते हैं। यह प्रसन्नता इनके चेहरे में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। कहा गया है कि यही वर्ग क्रांति के समय शोभा पाता है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से प्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है

कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

(i) **(ख)** गंभीर दोषों से
व्याख्या:
गंभीर दोषों से

(ii) **(क)** मनुष्य की स्वेच्छा पर
व्याख्या:
मनुष्य की स्वेच्छा पर

(iii) **(घ)** व्यक्तिगत भावना
व्याख्या:
व्यक्तिगत भावना

(iv) **(ख)** जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता
व्याख्या:
जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता

(v) **(ख)** मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर
व्याख्या:
मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लुट्टन सिंह सुडौल शरीर वाला एक देहाती पहलवान था। एक बार उसने श्यामनगर के राजा की आज्ञा लेकर पंजाब के पहलवान चाँद सिंह को ढोलक की ताल का अनुसरण कर चित कर दिया। अतः राजा साहब ने खुश होकर उसे अपने दरबार में रख लिया और उसे राज-पहलवान की उपाधि दे दी। उस दिन से राजा साहब के देहांत तक वह राज-पहलवान बना रहा।
श्यामनगर के राजा की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र ने विलायत से आकर राजपाट सँभाला। उनके पुत्र को पहलवानी में कोई भी दिलचस्पी नहीं थी इसलिए उसने पंद्रह वर्ष की लंबी अवधि के पश्चात् लुट्टन सिंह को राज-पहलवान को पद से हटा दिया, तब लुट्टन सिंह अपने पुत्रों के साथ गाँव आकर कुछ समय तो गाँववालों की सहायता से तथा अंत में मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करने लगा।

(ii) भक्तिन के जीवन में आने वाले व्यक्ति उसमें सहज मार्मिकता पाते हैं। छात्रावास की बालिकाएँ अपनी चाय बनवाने के लिए देहली पर बैठ जाती हैं और कुछ बाहर खड़ी होकर लेखिका के नाश्ते को चखकर उसका वर्णन करती हैं। भक्तिन दोनों समय का भोजन सवेरे ही बनाकर रख देती है, जिससे छात्रावास के बच्चों को आने-जाने में असुविधा न हो। ऐसा करने के लिए वह सनातन नियमों से भी समझौता कर लेती है इसलिए कहा जा सकता है कि उसकी सहजबुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

(iii) अशोक वृक्ष की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

i. अशोक एक सदाबहार वृक्ष है।
ii. इसके पत्ते आम के पत्तों से मिलते-जुलते हैं।
iii. इसका उपयोग मंगलकार्यों में किया जाता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। सांसारिक आकर्षणों के लिए तृष्णा, संचय में विश्वास, लालच, दिखावे की प्रवृत्ति वालों में आत्मबल का अभाव होता है।

(ii) गुड़धानी अनाज और गुड़ के मिश्रण को कहते हैं। यहाँ पर गुड़धानी से तात्पर्य अच्छी फसल से है। हमारी अर्थव्यस्था कृषि पर आधारित है, और कृषि वर्षा पर निर्भर होती है, अच्छी वर्षा से फसल भी अच्छी होगी इसलिए पानी के साथ गुड़धानी की माँग की जा रही है। यहाँ गुड़धानी प्रसन्नता और खुशहाली का प्रतीक भी है।

(iii) पाठ के आधार पर जातिवाद के पोषकों के समर्थन के आधार में यह बात आपत्तिजनक है कि यह जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। यह निश्चित ही तार्किक है कि श्रम विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु कोई भी सभ्य समाज श्रमिकों का विभिन्न श्रेणियों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) हाँ, यशोधर बाबू को अतीत जीवी कहा जा सकता है। क्योंकि यशोधर बाबू ने किशनदा के व्यवहारों से प्राप्त अनुशासन, कार्यनिष्ठा, सिद्धांत प्रियता, पारंपरिक मूल्यों का सम्मान, सादा जीवन, समय का पाबंद, कृतज्ञता, धार्मिक मूल्यों में आस्था इत्यादि जीवन-मूल्यों को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया था तथा इन्हीं मूल्यों पर चलने को वे संकल्पित थे। हालाँकि, यशोधर बाबू भी आधुनिकता के प्रभाव से अछूते नहीं रहे, किन्तु वे नए विचारों को अपनाने में कभी सफल भी नहीं हुए। वे इन दोनों के द्वन्द्व में फँसे हुए थे।

(ii) वसंत पाटील दुबला-पतला, परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था। वह घर से पूरी तैयारी करके आता था तथा उसके सभी सवाल ठीक होते थे। वह दूसरों के सवालों की जाँच करता था। उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया था। वह हमेशा पहली बेंच पर मास्टर के पास बैठता था। कक्षा के सभी छात्र उसका सम्मान करते थे। लेखक भी उसकी देखा देखी मेहनत करने लगा। उसने बस्ता व्यवस्थित किया, किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे।

वह भी वसंत पाटिल की तरह लड़कों के सवाल जाँचने लगा। इस तरह दोनों दोस्त बन गए तथा एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम करने लगे।

(iii)यह कहा जा सकता है कि खुदाई में प्राप्त धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुंदर मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश- विन्यास और आभूषण आदि उस समय के लोगों के सौंदर्य-बोध के परिचायक हैं। इस सबसे कहीं ज़्यादा सौंदर्य-बोध कराती हैं वहाँ की सुघड़ लिपि। यदि गहराई से सोचें तो वहाँ की प्रत्येक सुघड़ योजना भी तो सौंदर्य-बोध का ही एक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ढकी हुई पक्की नालियाँ बनाने के पीछे गंदगी से बचाव का जो उद्देश्य था वह भी तो मूल रूप से स्वच्छता और सौंदर्य का ही बोध कराता है। आवास की सुंदर व्यवस्था हो या अन्न भंडारण, सभी के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य-बोध काम कर रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि सिंधु-सभ्यता में नगर नियोजन से ज्यादा सौंदर्य बोध के दर्शन होते हैं।